प्रस्तुतीकरण

शोधकार्य में प्रस्तुतीकरण एक महत्वपूर्ण अंश है। प्रत्येक शोधकर्ता अपने शोधकार्य के अवधि में विषय को कई बार प्रस्तुतीकरण को देना पड़ता है। प्रस्तुतीकरण 'प्रस्तुत' शब्द से बना है जिसका अर्थ है- सुसज्जित रूप में वस्तुओं को सामने लाना है। जब किसी विषय या प्रकरण पर लेख रचना पूर्ण हो जाता है, तो श्रोताओं के समक्ष आकर्षक व सजावटी रूप में लेखक लेख को प्रस्तुत करता है- यही प्रस्तुतीकरण कहलाता है।

⇒ वाचिक प्रस्तुतीकरण: (Oral Presentation)

एक उत्तम वाचिक प्रस्तुति कौशल के माध्यम से लोगों को किसी भी विषय में अत्यन्त सरसता पूर्वक समझा जा सकता है एवं उन्हें प्रभावित किया जा सकता है। इससे स्थिति के अनुसार अपनी क्षमता को समायोजित करके अपनी प्रस्तुति को प्रभावी ढंग से संचालित किया जा सकता है।

• वाचिक प्रस्तुतीकरण में कौशल का महत्व:

मौखिक प्रस्तुति कौशल का अधिकांश महत्त्व प्राइवेट कंपनी, व्यवसायिक जीवन, और शैक्षिक क्षेत्रों में होता है। यह कौशल साक्षात्कार, प्रस्तुति, बिजनेस मीटिंग, प्रशिक्षण और अन्य सार्वजनिक एवं निजी सेमिनारों में उत्तम प्रस्तुति देने में और सफलता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है।

⇒ यान्त्रिक प्रस्तुतीकरण : (Mechanical Presentation)

इसके अन्तर्गत माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित Power Point Presentation प्रोग्राम शामिल है। इसमें किसी भी प्रकार के सूचनाओं को विभिन्न slides के माध्यम से दर्शाया जाता है; जिनमें Text, Images और अन्य मीडिया जैसे Audio, Video और Animation आदि शामिल है।

⇒ प्रस्तुतीकरण में ध्यान देने योग्य बातें :

वाचिक प्रस्तुतीकरण में कुछ निम्नलिखित विषयों पर ध्यान अपेक्षित है -

* प्रस्तुत विषय के ऊपर नई दृष्टिकोण :

जिस विषय पर प्रस्तुतीकरण देना है, उस विषय के ऊपर गहन अध्ययन की आवश्यकता है. ताकि प्रस्तुतकर्ता उसके ऊपर नई दृष्टिकोण से कुछ नया विचार कर सके। अर्थात् यदि पुराणे विषय के ऊपर भी कुछ बोले तो उसमें कुछ नयापन का भाव रहना। इससे प्रस्तुतकर्ता के बोलने में आत्मविश्वास तथा श्रोताओं के मध्य रोचकता भी उत्पन्न होगी। जिससे प्रस्तुतीकरण अपने पराकाष्ठा को प्राप्त कर सके।

* व्याकरण :

जिस भाषा में प्रस्तुतीकरण देना है उस भाषा के व्याकरण का सम्यक् प्रकार से ज्ञान होना चाहिए। किसी भी भाषा को शुद्ध रूप से जानने के लिए

व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण ही यह वेद का सर्वप्रमुख अंग मुख माना जाता है - 'मुखं व्याकरणं स्मृतम्'। ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन ने भी कहा है -

'प्रथमे हि विद्वांसो वैयाकरणाः, व्याकरणमूलत्वात् सर्वविद्यानाम्'

व्याकरण को न जानने वाले व्यक्ति को कन्या भी विवाह करने के लिए राजी नहीं होती -

यस्य षष्ठी चतुर्थी च विहस्य विहाय च।
यस्याहं च द्वितीया स्याद् द्वितीया स्यामहं कथम्॥

अर्थात् प्रस्तुतीकरण में व्याकरणगत वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए ताकि प्रस्तुतीकरण में प्रयुक्त भाषा की शुद्धता बनी रहे। अतः प्रस्तुतीकरण में व्याकरण के उपर भी ध्यान देना चाहिए।

* उच्चारण :

उच्चारण से तात्पर्य वर्णोच्चारण है। संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत शिक्षाग्रन्थों में वर्णोच्चारण को वैज्ञानिक रीति से निरूपण किया गया है। वर्णोच्चारण पद्धति के विषय में पाणिनीयशिक्षा में कहा गया है -

व्याघ्री यथा हरेत् पुत्रान् दंष्ट्राभ्यां न च पीडयेत्।
भीता पतनभेदाभ्यां तद्वद्वर्णान् प्रयोजयेत्॥

जिस प्रकार कोई बाघिन अपने बच्चे को दांतों से कोई बाधा उत्पन्न न करते हुए उसके गिरने का डर रखते हुए, अपने मुख से लेकर जाती है, उसी प्रकार वर्णों

का उच्चारण करना चाहिए।

वर्णों के उच्चारण को प्रभावित करने के लिए वक्ता में छः गुणों का रहना अपेक्षित है - "उच्चारण में मधुरता, अक्षरों की सुस्पष्टता, पदों का विच्छेद-पूर्वक उच्चारण, धैर्य तथा लय या प्रवाह" - ऐसे गुणसम्पन्न पाठक ही उत्तम पाठक कहलाता है -

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः ।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः ॥

दूसरी ओर कुछ ऐसे गुण हैं, जिनके रहना पाठक को अधम बनाता है। इसके लिए कहा गया है -

गीती शीघ्री शिरःकम्पी तथा लिखितपाठकः ।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाधमाः ॥

अर्थात्

- गाते हुए पढ़ना
- शीघ्रता से पढ़ने वाला
- शिर हिलाकर पढ़ने वाला
- पुस्तक में जैसा लिखि है, वैसे ही पढ़ने वाला
- बिना अर्थ जाने पढ़ने वाला
- फँसे गले से पढ़ने वाला पाठक अधम पाठक कहलाता है।

पाणिनीय शिक्षा में वर्णोच्चारण के लिए अनेक विषयों को निषेध किया गया है, जिसका वर्णन दो कारिका में किया गया है -

शंकितं भीतमुद्घुष्टमव्यक्तमनुनासिकम् ।
काकस्वरं शिरोसिरं तथा स्थानविवर्जितम् ॥
उपांशु दष्टं त्वरितं निरस्तं, विलम्बितं गद्गदितं प्रगीतम् ।
निष्पीडितं ग्रस्तपदाक्षरं च, वदेन्न दीनं न तु सानुनास्यम् ॥

अर्थात् सन्दिग्ध होकर, भयभीत होकर, उच्चध्वनि से, अस्पष्ट रूप से, निरनुनासिक का भी अनुनासिक रूप से, कौवें के स्वर के समान, अनावश्यक मूर्धा से, स्वाभाविक स्थान को छोड़कर;

मन्दस्वर से, दन्तपीडित अत्यन्त शीघ्रता से, पाठ को बीच-बीच में छोड़कर, गद्गदस्वर से, गाने की तरह, उत्साहरहित होकर, नाक से वर्णों का उच्चारण नहीं करना चाहिए ।

वेदमन्त्रों के लिए भी कहा गया है कि यदि वेदमन्त्र स्वर से अथवा वर्ण से अशुद्ध हो तो वह मन्त्र वाक्‌वज्र होकर यजमान का ही नाश करता है-

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा,
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह ।
स वाक्वज्रं यजमानं हिनस्ति,
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात् ॥

प्रस्तुतीकरण को प्रभावित बनाने के लिए शुद्ध वर्णोच्चारण का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। अतः प्रस्तुतकर्ता को इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है- "सम्यक् वर्णप्रयोगेण ब्रह्मलोके महीयते" ।

* शब्दभण्डार :

उत्तम प्रकार की प्रस्तुतीकरण के लिए शब्दभण्डार के उपर भी ध्यान देना चाहिए। जिस विषय पर प्रस्तुतीकरण है उससे सम्बन्धित अच्छे अच्छे शब्दों का प्रयोग प्रस्तुतीकरण को महत्त्वपूर्ण और रोचकपूर्ण बनाता है, पण्डितराज जगन्नाथ ने विषयानुकुल शब्द और अर्थ के उपस्थिति को ही प्रतिभा कहा है -

सा च काव्यघटनानुकुल- शब्दार्थोपस्थिति:

किसी पाश्चात्य विद्वान् ने इस विषय में कहा है -

"... while without Grammar very little can be conveyed, without vocabulary nothing can be conveyed."

इसलिए शोध कर्ता को अपने शब्दभण्डार पर ध्यान देना चाहिए।